

سُورَةُ يُوسُفَ

Surah 12 — Yusuf (Joseph) · Meccan · 111 Ayahs · Translation: Hindi

1

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝ تِلْكَ آيَاتُ الْكِتَابِ الْمُبِينِ

अलिफ़ लाम रा ये वाज़ेए व रौशन किताब की आयतें है

2

إِنَّا أَنْزَلْنَاهُ قُرْءَانًا عَرَبِيًّا ۝ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ

हमने इस किताब (कुरान) को अरबी में नाज़िल किया है ताकि तुम समझो

3

نَحْنُ نَقُصُّ عَلَيْكَ أَحْسَنَ الْقَصَصِ بِمَا أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ هَذَا الْقُرْءَانُ وَإِنْ كُنْتَ مِنْ
قَبْلِهِ لَمِنَ الْغَافِلِينَ ۝

(ऐ रसूल) हम तुम पर ये कुरान नाज़िल करके तुम से एक निहायत उम्दा किस्सा बयान करते हैं अगरचे तुम इसके पहले
(उससे) बिल्कुल बेखबर थे

4

إِذْ قَالَ يُوسُفُ لِأَبِيهِ يَا أَبَتِ إِنِّي رَأَيْتُ أَحَدَ عَشَرَ كَوْكَبًا ۝ وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ رَأَيْتُهُمْ
لِي سَاجِدِينَ

(वह वक्त याद करो) जब यूसूफ ने अपने बाप से कहा ऐ अब्बा मैंने ग्यारह सितारों और सूरज चाँद को (ख्वाब में) देखा है मैंने
देखा है कि ये सब मुझे सज्जदा कर रहे हैं

5

قَالَ يَبْنَى لَا تَقْصُصْ رُءْيَاكَ عَلَىٰ إِخْوَتِكَ فَيَكِيدُوا لَكَ كَيْدًا ۝ إِنَّ الشَّيْطَانَ
لِلْإِنْسَنِ عَدُوٌّ مُّبِينٌ ۝

याकूब ने कहा ऐ बेटा (देखो खबरदार) कहीं अपना ख्वाब अपने भाईयों से न दोहराना (वरना) वह लोग तुम्हारे लिए मक्कारी
की तदबीर करने लगेंगे इसमें तो शक ही नहीं कि शैतान आदमी का खुला हुआ दुश्मन है

6

وَكَذَلِكَ يَجْتَبِيكَ رَبُّكَ وَيُعَلِّمُكَ مِنْ تَأْوِيلِ الْأَحَادِيثِ وَيُتِمُّ نِعْمَتَهُ ۖ عَلَيْكَ وَعَلَىٰ آلِ
يَعْقُوبَ كَمَا أَتَمَّهَا عَلَىٰ أَبَوَيْكَ مِنْ قَبْلُ إِبْرَاهِيمَ وَإِسْحَاقَ ۚ إِنَّ رَبَّكَ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۝

और (जो तुमने देखा है) ऐसा ही होगा कि तुम्हारा परवरदिगार तुमको बरगुज़ीदा (इज्जतदार) करेगा और तुम्हें ख्वाबो की ताबीर सिखाएगा और जिस तरह इससे पहले तुम्हारे दादा परदादा इबराहीम और इसहाक़ पर अपनी नेअमत पूरी कर चुका है और इसी तरह तुम पर और याकूब की औलाद पर अपनी नेअमत पूरी करेगा बेशक तुम्हारा परवरदिगार बड़ा वाक्फ़िकार हकीम है

7

۝ لَقَدْ كَانَ فِي يُوسُفَ وَإِخْوَتِهِ ۚ آيَاتٌ ۖ لِلسَّائِلِينَ

(ऐ रसूल) यूसुफ़ और उनके भाइयों के किस्से में पूछने वाले (यहूद) के लिए (तुम्हारी नुबूवत) की यक़ीनन बहुत सी निशानियाँ हैं

8

إِذْ قَالُوا ۝ لِيُوسُفُ وَأَخُوهُ أَحَبُّ إِلَيْنَا أُبَيِّنَا مِمَّا وَنَحْنُ عُصْبَةٌ ۚ إِنَّ آبَانَا لَفِي ضَلَالٍ
مُبِينٍ

कि जब (यूसुफ़ के भाइयों ने) कहा कि बावजूद कि हमारी बड़ी जमाअत है फिर भी यूसुफ़ और उसका हकीक़ी भाई (इब्ने यामीन) हमारे वालिद के नज़दीक बहुत ज़्यादा प्यारे हैं इसमें कुछ शक़ नहीं कि हमारे वालिद यक़ीनन सरीही (खुली हुई) ग़लती में पड़े हैं

9

۝ أَقْتُلُوا ۚ يُونُسَ أَوْ اطْرَحُوهُ أَرْضًا ۚ يَخْلُ لَكُمْ وَجْهُ أَبِيكُمْ وَتَكُونُوا ۚ مِنْ ۚ بَعْدِهِ ۚ قَوْمًا صَالِحِينَ

(ख़ैर तो अब मुनासिब ये है कि या तो) यूसुफ़ को मार डालो या (कम से कम) उसको किसी जगह (चल कर) फेंक आओ तो अलबत्ता तुम्हारे वालिद की तवज्जो सिर्फ़ तुम्हारी तरफ़ हो जाएगा और उसके बाद तुम सबके सब (बाप की तवज्जो से) भले आदमी हो जाओगें

10

قَالَ قَائِلٌ مِّنْهُمْ لَا تَقْتُلُوا ۖ يُوسُفَ وَأَلْقَوْهُ فِي غِيَبَتِ الْجُبِّ يَلْتَقِطُهُ بَعْضُ السَّيَّارَةِ
إِنْ كُنْتُمْ فَعِلِينَ

उनमें से एक कहने वाला बोल उठा कि यूसुफ को जान से तो न मारो हाँ अगर तुमको ऐसा ही करना है तो उसको किसी अन्धे
कुएँ में (ले जाकर) डाल दो कोई राहगीर उसे निकालकर ले जाएगा (और तुम्हारा मतलब हासिल हो जाएगा)

11

قَالُوا ۖ يَأْبَانَا مَا لَكَ لَا تَأْمَنَا عَلَى يُوسُفَ وَإِنَّا لَهُ لَنُصِحُونَ

सब ने (याकूब से) कहा अब्बा जान आखिर उसकी क्या वजह है कि आप यूसुफ के बारे में हमारा ऐतबार नहीं करते

12

أَرْسَلَهُ مَعَنَا غَدًا ۖ يَرْتَعُ وَيَلْعَبُ وَإِنَّا لَهُ لَحَافِظُونَ

हालाँकि हम लोग तो उसके खैर खाह (भला चाहने वाले) हैं आप उसको कुल हमारे साथ भेज दीजिए कि ज़रा (जंगल) से फल
वगैरह खाए और खेले कूदे

13

قَالَ إِنِّي لَيَحْزُنُنِي أَنْ تَذْهَبُوا ۖ بِهِ ۖ وَأَخَافُ أَنْ يَأْكُلَهُ الذِّبُّ وَأَنْتُمْ عَنْهُ غٰفِلُونَ

और हम लोग तो उसके निगेहबान हैं ही याकूब ने कहा तुम्हारा उसको ले जाना मुझे सख्त सदमा पहुँचाना है और मैं तो इससे
डरता हूँ कि तुम सब के सब उससे बेखबर हो जाओ और (मुबादा) उसे भेड़िया फाड़ खाए

14

قَالُوا ۖ لَئِنْ أَكَلَهُ الذِّبُّ وَنَحْنُ عُصْبَةٌ إِنَّا إِذًا لَّخٰسِرُونَ

वह लोग कहने लगे जब हमारी बड़ी जमाअत है (इस पर भी) अगर उसको भेड़िया खा जाए तो हम लोग यक्रीनन बड़े घाटा
उठाने वाले (निकलते) ठहरेगें

15

فَلَمَّا ذَهَبُوا ۖ بِهِ ۖ وَأَجْمَعُوا ۖ أَنْ يَجْعَلُوهُ فِي غِيَبَتِ الْجُبِّ ۖ وَأَوْحَيْنَا إِلَيْهِ لَتُنَبِّئَهُمْ
بِأَمْرِهِمْ هَذَا وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ

गरज़ यूसुफ को जब ये लोग ले गए और इस पर इत्तेफ़ाक़ कर लिया कि उसको अन्धे कुएँ में डाल दें और (आखिर ये लोग
गुजरे तो) हमने युसुफ़ के पास 'वही' भेजी कि तुम घबराओ नहीं हम अनक़रीब तुम्हें मरतबे (उँचे मकाम) पर पहुँचाएंगे (तब
तुम) उनके उस फेल (बद) से तम्बीह (आगाह) करोगे

وَجَاءُوا آبَاهُمْ عِشَاءً ۚ يَبْكُونَ

जब उन्हें कुछ ध्यान भी न होगा और ये लोग रात को अपने बाप के पास (बनवट) से रोते पीटते हुए आए

قَالُوا ۚ يَا أَبَانَا إِنَّا ذَهَبْنَا نَسْتَبِقُ وَتَرَكْنَا يُوسُفَ عِنْدَ مَتْعِنَا فَاكَلَهُ الذِّئْبُ ۚ وَمَا أَنْتَ بِمُؤْمِنٍ ۚ لَّنَا وَلَوْ كُنَّا صَادِقِينَ

और कहने लगे ऐ अब्बा हम लोग तो जाकर दौड़ने लगे और यूसुफ को अपने असबाब के पास छोड़ दिया इतने में भेड़िया आकर उसे खा गया हम लोग अगर सच्चे भी हो मगर आपको तो हमारी बात का यकीन आने का नहीं

وَجَاءُوا عَلَى قَمِيصِهِ بِدَمٍ ۚ كَذِبٍ ۚ قَالَ بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ أَنْفُسُكُمْ أَمْرًا ۚ فَصَبْرًا ۚ جَمِيلًا ۚ وَاللَّهُ الْمُسْتَعَانُ عَلَى مَا تَصِفُونَ

और ये लोग यूसुफ के कुरते पर झूठ मूठ (भेड़) का खून भी (लगा के) लाए थे, याकूब ने कहा (भेड़िया ने ही खाया (बल्कि) तुम्हारे दिल ने तुम्हारे बचाओ के लिए एक बात गढ़ी वरना कुरता फटा हुआ जरूर होता फिर सब व शुक्र है और जो कुछ तुम बयान करते हो उस पर खुदा ही से मदद माँगी जाती है

وَجَاءَتْ سَيَّارَةٌ ۚ فَأَرْسَلُوا ۚ وَارِدَهُمْ فَأَدْلَى دَلْوُهُ ۚ قَالَ يَبْشَرِي هَذَا غُلْمٌ ۚ وَأَسْرُوهُ بَضْعَةً ۚ وَاللَّهُ عَلِيمٌ ۚ بِمَا يَعْمَلُونَ

और (खुदा की शान देखो) एक काफ़ला (वहाँ) आकर उतरा उन लोगों ने अपने सक्के (पानी भरने वाले) को (पानी भरने) भेजा गरज़ उसने अपना डोल डाला ही था (कि यूसुफ उसमें बैठे और उसने खीचा तो निकल आए) वह पुकारा आहा ये तो लड़का है और काफ़ला वालो ने यूसुफ को कीमती सरमाया समझकर छिपा रखा हालाँकि जो कुछ ये लोग करते थे खुदा उससे खूब वाकिफ था

وَشَرَوْهُ بِثَمَنٍ ۚ بَخْسٍ ۚ دَرْهِمَ مَعْدُودَةٍ ۚ وَكَانُوا ۚ فِيهِ مِنَ الزَّاهِدِينَ

(जब यूसुफ के भाइयों को ख़बर लगी तो आ पहुँचे और उनको अपना गुलाम बताया और उन लोगों ने यूसुफ को गिनती के खोटे चन्द दरहम (बहुत थोड़े दाम पर बेच डाला) और वह लोग तो यूसुफ से बेज़ार हो ही रहे थे

وَقَالَ الَّذِي اشْتَرَاهُ مِنْ مِصْرَ لِمَرْأَتِهِ ۖ أَكْرَمِي مَثْوَاهُ عَسَىٰ أَنْ يَنْفَعَنَا أَوْ نَتَّخِذَهُ ۚ
 وَلَدًّا ۚ ا ۚ وَكَذَلِكَ مَكَّنَّا لِيُوسُفَ فِي الْأَرْضِ وَلِنُعَلِّمَهُ ۚ مِنْ تَأْوِيلِ الْأَحَادِيثِ ۚ وَاللَّهُ
 غَالِبٌ عَلَىٰ أَمْرِهِ ۚ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ

(यूसुफ को लेकर मिस्र पहुँचे और वहाँ उसे बड़े नफे में बेच डाला) और मिस्र के लोगों से (अज़ीजे मिस्र) जिसने (उनको खरीदा था अपनी बीवी (ज़ुलेखा) से कहने लगा इसको इज्जत व आबरु से रखो अजब नहीं ये हमें कुछ नफा पहुँचाए या (शायद) इसको अपना बेटा ही बना लें और यूँ हमने यूसुफ को मुल्क (मिस्र) में (जगह देकर) क़ाबिज़ बनाया और ग़रज़ ये थी कि हमने उसे ख़्वाब की बातों की ताबीर सिखायी और खुदा तो अपने काम पर (हर तरह के) ग़ालिब व क़ादिर है मगर बहुतेरे लोग (उसको) नहीं जानते

وَلَمَّا بَلَغَ أَشُدَّهُ ۚ ءَاتَيْنَاهُ حُكْمًا ۚ ا وَعِلْمًا ۚ ا ۚ وَكَذَلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ

और जब यूसुफ अपनी जवानी को पहुँचे तो हमने उनको हुक्म (नुबूवत) और इल्म अता किया और नेकी कारों को हम यूँ ही बदला दिया करते हैं

وَرُوْدَتْهُ أَلَّتِي هُوَ فِي بَيْتِهَا عَنْ نَفْسِهِ ۚ وَغَلَّقَتِ الْأَبْوَابَ وَقَالَتْ هَيْتَ لَكَ ۚ قَالَ مَعَاذَ
 اللَّهِ ۚ إِنَّهُ رَبِّي أَحْسَنَ مَثْوَايَ ۚ إِنَّهُ ۚ لَا يُفْلِحُ الظَّالِمُونَ

और जिस औरत ज़ुलेखा के घर में यूसुफ रहते थे उसने अपने (नाजायज़) मतलब हासिल करने के लिए खुद उनसे आरज़ू की और सब दरवाज़े बन्द कर दिए और (बे ताना) कहने लगी लो आओ यूसुफ ने कहा माज़अल्लाह वह (तुम्हारे मियाँ) मेरा मालिक हैं उन्होंने मुझे अच्छी तरह रखा है मैं ऐसा ज़ुल्म क्यों कर सकता हूँ बेशक ऐसा ज़ुल्म करने वाले फ़लाह नहीं पाते

وَلَقَدْ هَمَّتْ بِهِ ۚ وَهَمَّ بِهَا لَوْلَا أَنْ رَأَىٰ بُرْهَانَ رَبِّهِ ۚ كَذَلِكَ لِنَصْرِفَ عَنْهُ السُّوءَ
 وَالْفَحْشَاءَ ۚ إِنَّهُ ۚ مِنْ عِبَادِنَا الْمُخْلَصِينَ

ज़ुलेखा ने तो उनके साथ (बुरा) इरादा कर ही लिया था और अगर ये भी अपने परवरदिगार की दलील न देख चुके होते तो क्रस्द कर बैठते (हमने उसको यूँ बचाया) ताकि हम उससे बुराई और बदकारी को दूर रखे बेशक वह हमारे ख़ालिस बन्दों में से था

وَأَسْتَبَقَا الْبَابَ وَقَدَّتْ قَمِيصَهُ ۖ مِنْ دُبُرٍ ۖ وَأَلْفَيَا سَيِّدَهَا لَدَا الْبَابِ ۚ قَالَتْ مَا جَزَاءُ مَنْ أَرَادَ بِأَهْلِكَ سُوءًا إِلَّا أَنْ يُسْجَنَ أَوْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۚ

और दोनों दरवाजे की तरफ झपट पड़े और जुलेखा (ने पीछे से उनका कुर्ता पकड़ कर खीचा और) फाड़ डाला और दोनों ने जुलेखा के खाविन्द को दरवाजे के पास खड़ा पाया जुलेखा झट (अपने शौहर से) कहने लगी कि जो तुम्हारी बीबी के साथ बदकारी का इरादा करे उसकी सज़ा इसके सिवा और कुछ नहीं कि या तो कैद कर दिया जाए

قَالَ هِيَ رُوْدَتْنِي عَنْ نَفْسِي ۖ وَشَهِدَ شَاهِدٌ ۖ مِّنْ أَهْلِهَا إِن كَانَ قَمِيصُهُ ۖ قَدْ مِّنْ قَبْلٍ ۖ فَصَدَقَتْ وَهُوَ مِنَ الْكَذِبِينَ

या दर्दनाक अज़ाब में मुब्तिला कर दिया जाए यूसुफ ने कहा उसने खुद (मुझसे मेरी आरज़ू की थी और जुलेखा) के कुन्वे वालों में से एक गवाही देने वाले (दूध पीते बच्चे) ने गवाही दी कि अगर उनका कुर्ता आगे से फटा हुआ हो तो ये सच्ची और वह झूठे

وَإِنْ كَانَ قَمِيصُهُ ۖ قَدْ مِّنْ دُبُرٍ ۖ فَكَذَبَتْ وَهُوَ مِنَ الصّٰدِقِينَ

और अगर उनका कुर्ता पीछे से फटा हुआ हो तो ये झूठी और वह सच्चे

فَلَمَّا رَأَىٰ قَمِيصَهُ ۖ قَدْ مِّنْ دُبُرٍ ۖ قَالَ إِنَّهُ ۖ مِنْ كَيْدِكُنَّ ۖ إِنَّ كَيْدَكُنَّ عَظِيمٌ ۖ

फिर जब अज़ीजे मिस्र ने उनका कुर्ता पीछे से फटा हुआ देखा तो (अपनी औरत से) कहने लगा ये तुम ही लोगों के चलत्तर है उसमें शक नहीं कि तुम लोगों के चलत्तर बड़े (ग़ज़ब के) होते हैं

يُوسُفُ أَعْرِضْ عَنْ هٰذَا ۖ وَأَسْتَغْفِرِي لِذَنبِكِ ۖ إِنَّكِ كُنْتِ مِنَ الْخَاطِئِينَ

(और यूसुफ से कहा) ऐ यूसुफ इसको जाने दो और (औरत से कहा) कि तू अपने गुनाह की माफी माँग क्योंकि बेशक तू ही सरतापा ख़तावार है

ۚ وَقَالَ نِسْوَةٌ ۖ فِي الْمَدِينَةِ امْرَأَتُ الْعَزِيزِ تُرْوَدُ فَتَلْهٰٓأ عَنْ نَّفْسِهِ ۖ ۚ قَدْ شَغَفَهَا حُبًّا ۚ إِنَّا لَنَرٰٓهَا فِي ضَلٰٓلٍ مُّبِينٍ ۖ

और शहर (मिस्र) में औरतें चर्चा करने लगी कि अज़ीज़ (मिस्र) की बीबी अपने गुलाम से (नाजायज़) मतलब हासिल करने की आरज़ू मन्द है बेशक गुलाम ने उसे उलफ़त में लुभाया है हम लोग तो यक़ीनन उसे सरीही ग़लती में मुब्तिला देखते हैं

فَلَمَّا سَمِعَتْ بِمَكْرِهِنَّ أَرْسَلَتْ إِلَيْهِنَّ وَأَعْتَدَتْ لَهُنَّ مُتَكًّا ۖ وَءَاتَتْ كُلَّ وَاحِدَةٍ ۖ
 مِّنْهُنَّ سِكِّينًا ۖ وَقَالَتِ اخْرُجْ عَلَيْهِنَّ ۖ فَلَمَّا رَأَيْنَهُ أَكْبَرْنَهُ ۖ وَقَطَّعْنَ أَيْدِيَهُنَّ وَقُلْنَ
 حُشَّ لِلَّهِ مَا هَذَا بَشَرًا إِنْ هَذَا إِلَّا مَلَكٌ ۖ كَرِيمٌ ۖ

तो जब जुलेखा ने उनके ताने सुने तो उस ने उन औरतों को बुला भेजा और उनके लिए एक मजलिस आरास्ता की और उसमें से हर एक के हाथ में एक छुरी और एक (नारंगी) दी (और कह दिया कि जब तुम्हारे सामने आए तो काट के एक फ़ाक उसको दे देना) और यूसुफ़ से कहा कि अब इनके सामने से निकल तो जाओ तो जब उन औरतों ने उसे देखा तो उसके बड़ा हसीन पाया तो सब के सब ने (बे खुदी में) अपने अपने हाथ काट डाले और कहने लगी हाय अल्लाह ये आदमी नहीं है ये तो हो न हो बस एक मुअज़्ज़िज़ (इज्ज़त वाला) फ़रिश्ता है

قَالَتْ فَذَلِكُنَّ الَّذِي لُمْتُنَّنِي فِيهِ ۖ وَلَقَدْ رُودَتْهُ ۖ عَنْ نَفْسِهِ ۖ فَاسْتَعْصَمَ ۖ وَلَئِن لَّمْ
 يَفْعَلْ مَا ءَامُرُهُ ۖ لَيُسْجَنَنَّ وَلَيَكُونًا ۖ مِّنَ الصَّغِيرِينَ

(तब जुलेखा उन औरतों से) बोली कि बस ये वही तो है जिसकी बदौलत तुम सब मुझे मलामत (बुरा भला) करती थीं और हाँ बेशक मैं उससे अपना मतलब हासिल करने की खुद उससे आरज़ू मन्द थी मगर ये बचा रहा और जिस काम का मैं हुक्म देती हूँ अगर ये न करेगा तो ज़रूर कैद भी किया जाएगा और ज़लील भी होगा (ये सब बातें यूसुफ़ ने मेरी बारगाह में) अर्ज़ की

قَالَ رَبِّ السِّجْنُ أَحَبُّ إِلَيَّ مِمَّا يَدْعُونَنِي إِلَيْهِ ۖ وَإِلَّا تَصْرِفْ عَنِّي كَيْدَهُنَّ أَصْبُ
 إِلَيْهِنَّ وَأَكُن مِّنَ الْجَاهِلِينَ

ऐ मेरे पालने वाले जिस बात की ये औरतें मुझ से ख्वाहिश रखती हैं उसकी निस्वत (बदले में) मुझे कैद खानों ज्यादा पसन्द है और अगर तू इन औरतों के फ़रेब मुझसे दफा न फरमाएगा तो (शायद) मैं उनकी तरफ माएल (झुक) हो जाऊँ ले तो जाओ और जाहिलों से शुमार किया जाऊँ

فَاسْتَجَابَ لَهُ ۖ رَبُّهُ ۖ فَصَرَفَ عَنْهُ كَيْدَهُنَّ ۖ إِنَّهُ ۖ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ

तो उनके परवरदिगार ने उनकी सुन ली और उन औरतों के मकर को दफा कर दिया इसमें शक़ नहीं कि वह बड़ा सुनने वाला वाक्फ़िकार है

يُصْحَبِي السِّجْنَ ءَأَرْبَابٌ ۚ مُتَفَرِّقُونَ خَيْرٌ أَمْ اللَّهُ الْوَحْدُ الْقَهَّارُ

ऐ मेरे कैद खाने के दोनो रफीकों (साथियों) (ज़रा ग़ौर तो करो कि) भला जुदा जुदा माबूद अच्छे या खुदाएँ एकता ज़बरदस्त (अफसोस)

مَا تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِهِ ۚ إِلَّا أَسْمَاءٌ ۚ سَمَّيْتُمُوهَا أَنْتُمْ وَءَابَاؤُكُمْ مِمَّا أَنْزَلَ اللَّهُ بِهَا مِنْ سُلْطَانٍ ۚ إِنَّ الْحُكْمَ إِلَّا لِلَّهِ ۚ أَمَرَ أَلَّا تَعْبُدُوا ۚ إِلَّا إِيَّاهُ ۚ ذَلِكَ الدِّينُ الْقَيِّمُ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ

तुम लोग तो खुदा को छोड़कर बस उन चन्द नामों ही को परसतिश करते हो जिन को तुमने और तुम्हारे बाप दादाओं ने गढ़ लिया है खुदा ने उनके लिए कोई दलील नहीं नाज़िल की हुकूमत तो बस खुदा ही के वास्ते खास है उसने तो हुक्म दिया है कि उसके सिवा किसी की इबादत न करो यही सीधा दीन है मगर (अफसोस) बहुतेरे लोग नहीं जानते हैं

يُصْحَبِي السِّجْنَ أَمَّا أَحَدُكُمَا فَيَسْقِي رَبَّهُ ۚ خَمْرًا ۚ وَأَمَّا الْآخَرُ فَيُصْلَبُ فَتَأْكُلُ الطَّيْرُ مِنْ رَأْسِهِ ۚ قُضِيَ الْأَمْرُ الَّذِي فِيهِ تَسْتَفْتِيَانِ

ऐ मेरे कैद खाने के दोनो रफीको (अच्छा अब ताबीर सुनो तुममें से एक (जिसने अंगूर देखा रिहा होकर) अपने मालिक को शराब पिलाने का काम करेगा और (दूसरा) जिसने रोटियाँ सर पर (देखी हैं) तो सूली दिया जाएगा और चिड़िया उसके सर से (नोच नोच) कर खाएगी जिस अम्र को तुम दोनों दरयाफ्त करते थे (वह ये है और) फैसला हो चुका है

وَقَالَ لِلَّذِي ظَنَّ أَنَّهُ ۚ نَاجٍ ۚ مِّنْهُمَا أَذْكُرْنِي عِنْدَ رَبِّكَ فَأَنْسَاهُ الشَّيْطَانُ ذِكْرَ رَبِّهِ ۚ فَلَبِثَ فِي السِّجْنِ بِضْعَ سِنِينَ

और उन दोनों में से जिसकी निस्बत यूसुफ ने समझा था वह रिहा हो जाएगा उससे कहा कि अपने मालिक के पास मेरा भी तज़क़िरा करना (कि मैं बेजुर्म कैद हूँ) तो शैतान ने उसे अपने आक्रा से ज़िक्र करना भुला दिया तो यूसुफ कैद खाने में कई बरस रहे

وَقَالَ الْمَلِكُ إِنِّي أَرَى سَبْعَ بَقَرَاتٍ سِمَانٍ يَأْكُلُهُنَّ سَبْعٌ عِجَافٌ وَسَبْعَ
سُنْدٍ بُلَّتْ خُضْرٌ وَأُخْرَى يَابِسَتٌ يَأْيُهَا أَلْمَلَأُ أَفْتُونِي فِي رُءْيَايَ إِن كُنْتُمْ لِلرُّءْيَا
تَعْبُرُونَ

और (इसी असना (बीच) में) बादशाह ने (भी) ख्वाब देखा और) कहा मैंने देखा है कि सात मोटी ताज़ी गाए हैं उनको सात दुबली पतली गाय खाए जाती हैं और सात ताज़ी सब्ज बालियाँ (देखी) और फिर (सात) सूखी बालियाँ ऐ (मेरे दरबार के) सरदारों अगर तुम लोगों को ख्वाब की ताबीर देनी आती हो तो मेरे (इस) ख्वाब के बारे में हुक्म लगाओ

قَالُوا أَضْغَتْ أَحْلَمٌ وَمَا نَحْنُ بِتَأْوِيلِ الْأَحْلَمِ بِعَلَمِينَ

उन लोगों ने अर्ज की कि ये तो (कुछ) ख्वाब परेशों (सा) है और हम लोग ऐसे ख्वाब (परेशों) की ताबीर तो नहीं जानते हैं

وَقَالَ الَّذِي نَجَا مِنْهُمَا وَادَّكَرَ بَعْدَ أُمَّةٍ أَنَا أُنَبِّئُكُمْ بِتَأْوِيلِهِ فَأَرْسِلُونِ

और जिसने उन दोनों में से रिहाई पाई थी (साकी) और उसको एक ज़माने के बाद (यूसुफ का क्रिस्ता) याद आया बोल उठा कि मुझे (क़ैद खाने तक) जाने दीजिए तो मैं उसकी ताबीर बताए देता हूँ

يُوسُفُ أَيُّهَا الصِّدِّيقُ أَفْتِنَا فِي سَبْعِ بَقَرَاتٍ سِمَانٍ يَأْكُلُهُنَّ سَبْعٌ عِجَافٌ وَسَبْعِ
سُنْدٍ بُلَّتْ خُضْرٌ وَأُخْرَى يَابِسَتٌ لَّعَلِّي أَرْجِعُ إِلَى النَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَعْلَمُونَ

(गरज़ वह गया और यूसुफ से कहने लगा) ऐ यूसुफ ऐ बड़े सच्चे (यूसुफ) ज़रा हमें ये तो बताइए कि सात मोटी ताज़ी गायों को सात पतली गाय खाए जाती है और सात बालियाँ हैं हरी कचवा और फिर (सात) सूखी मुरझाई (इसकी ताबीर क्या है) तो मैं लोगों के पास पलट कर जाऊँ (और बयान करूँ)

قَالَ تَزْرَعُونَ سَبْعَ سِنِينَ دَأَبًا فَمَا حَصَدْتُمْ فَذَرُوهُ فِي سُنْدٍ بُلِّهِ إِلَّا قَلِيلًا مِّمَّا
تَأْكُلُونَ

ताकि उनको भी (तुम्हारी क्रदर) मालूम हो जाए यूसुफ ने कहा (इसकी ताबीर ये है) कि तुम लोग लगातार सात बरस काश्तकारी करते रहोगे तो जो (फसल) तुम काटो उस (के दाने) को बालियों में रहने देना (छुड़ाना नहीं) मगर थोड़ा (बहुत) जो तुम खुद खाओ

ثُمَّ يَأْتِي مِنْ ۙ بَعْدِ ذَلِكَ سَبْعٌ ۙ شِدَادٌ ۙ يَأْكُلْنَ مَا قَدَّمْتُمْ لَهُنَّ إِلَّا قَلِيلًا ۙ ا مِمَّا
تُحْصِنُونَ

उसके बाद बड़े सख्त (खुशक साली (सूखे) के) सात बरस आएंगे कि जो कुछ तुम लोगों ने उन सातों साल के वास्ते पहले जमा कर रखा होगा सब खा जाएंगे मगर बहुत थोड़ा सा जो तुम (बीज के वास्ते) बचा रखोगे

ثُمَّ يَأْتِي مِنْ ۙ بَعْدِ ذَلِكَ عَامٌ ۙ فِيهِ يُغَاثُ النَّاسُ وَفِيهِ يَعْصِرُونَ

(बस) फिर उसके बाद एक साल आएगा जिसमें लोगों के लिए खूब मेंह बरसेगी (और अंगूर भी खूब फलेगा) और लोग उस साल (उन्हें) शराब के लिए निचोड़ेंगे

وَقَالَ الْمَلِكُ أَتُؤْتُونِي بِهِ ۙ ۙ فَلَمَّا جَاءَهُ الرَّسُولُ قَالَ ارْجِعْ إِلَىٰ رَبِّكَ فَسْأَلْهُ مَا بَالُ
النِّسْوَةِ الَّتِي قَطَّعْنَ أَيْدِيَهُنَّ ۙ ۙ إِنَّ رَبِّي بِكَيْدِهِنَّ عَلِيمٌ ۙ

(ये ताबीर सुनते ही) बादशाह ने हुक्म दिया कि यूसुफ को मेरे हुज़ूर में तो ले आओ फिर जब (शाही) चौबदार (ये हुक्म लेकर) यूसुफ के पास आया तो यूसुफ ने कहा कि तुम अपनी सरकार के पास पलट जाओ और उनसे पूछो कि (आप को) कुछ उन औरतों का हाल भी मालूम है जिन्होंने (मुझे देख कर) अपने अपने हाथ काट डाले थे कि या मैं उनका तालिब था

قَالَ مَا خَطْبُكُنَّ إِذْ رُودْتُنَّ يُوسُفَ عَنِ نَفْسِهِ ۙ ۙ قُلْنَ حَاشَ لِلَّهِ مَا عَلِمْنَا عَلَيْهِ مِنْ
سُوءٍ ۙ ۙ قَالَتِ امْرَأَتُ الْعَزِيزِ النَّ حَصْحَصَ الْحَقُّ أَنَا ۙ رُودَتْهُ ۙ ۙ عَنِ نَفْسِهِ ۙ ۙ
وَإِنَّهُ ۙ ۙ لَمِنَ الصّٰدِقِينَ

या वह (मेरी) इसमें तो शक ही नहीं कि मेरा परवरदिगार ही उनके मक़ से खूब वाक़िफ है चुनान्वे बादशाह ने (उन औरतों को तलब किया) और पूछा कि जिस वक़्त तुम लोगों ने यूसुफ से अपना मतलब हासिल करने की खुद उन से तमन्ना की थी तो हमें क्या मामला पेश आया था वह सब की सब अर्ज करने लगी हाशा अल्लाह हमने यूसुफ में तो किसी तरह की बुराई नहीं देखी (तब) अज़ीज़ मिस्र की बीबी (ज़ुलेखा) बोल उठी अब तू ठीक ठीक हाल सब पर ज़ाहिर हो ही गया (असल बात ये है कि) मैंने खुद उससे अपना मतलब हासिल करने की तमन्ना की थी और बेशक वह यक़ीनन सच्चा है

ذَلِكَ لِيَعْلَمَ أَنِّي لَمْ أَخُنْهُ بِالْغَيْبِ وَأَنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي كَيْدَ الْخَائِنِينَ

(ये वाक़िया चौबदार ने यूसुफ से बयान किया (यूसुफ ने कहा) ये क़िस्से मैंने इसलिए छेड़ा) ताकि तुम्हारे बादशाह को मालूम हो जाए कि मैंने अज़ीज़ की ग़ैबत में उसकी (अमानत में ख़यानत नहीं की) और खुदा ख़यानत करने वालों की मक्कारी हरगिज़ चलने नहीं देता

﴿ وَمَا أَطْرَيْ نَفْسِي ﴾ ﴿ إِنَّ النَّفْسَ لَأَمَّارَةٌ ﴾ ﴿ بِالسُّوءِ إِلَّا مَا رَحِمَ رَبِّي ﴾ ﴿ إِنَّ رَبِّي غَفُورٌ ﴾ ﴿ رَحِيمٌ ﴾

और (यू तो) मैं भी अपने नफ्स को गुनाहो से बे लौस नहीं कहता हूँ क्योंकि (मैं भी बशर हूँ और नफ्स बराबर बुराई की तरफ उभारता ही है मगर जिस पर मेरा परवरदिगार रहम फरमाए (और गुनाह से बचाए)

وَقَالَ الْمَلِكُ أَتُؤْنِي بِهِ ﴿ أَسْتَخْلِصُهُ لِنَفْسِي ﴾ ﴿ فَلَمَّا كَلَّمَهُ ﴿ قَالَ إِنَّكَ الْيَوْمَ لَدَيْنَا مَكِينٌ أَمِينٌ ﴿

इसमें शक़ नहीं कि मेरा परवरदिगार बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है और बादशाह ने हुक्म दिया कि यूसुफ को मेरे पास ले आओ तो मैं उनको अपने ज़ाती काम के लिए ख़ास कर लूंगा फिर उसने यूसुफ से बातें की तो यूसुफ की आला क़ाबलियत साबित हुई (और) उसने हुक्म दिया कि तुम आज (से) हमारे सरकार में यक्तीन बावक़ार (और) मुअतबर हो

قَالَ أَجْعَلْنِي عَلَى خَزَائِنِ الْأَرْضِ ﴿ إِنِّي حَفِيظٌ عَلِيمٌ ﴿

यूसुफ ने कहा (जब अपने मेरी क़दर की है तो) मुझे मुल्की खज़ानों पर मुक़र्रर कीजिए क्योंकि मैं (उसका) अमानतदार खज़ान्ची (और) उसके हिसाब व किताब से भी वाक़िफ़ हूँ

وَكَذَلِكَ مَكَّنَّا لِيُوسُفَ فِي الْأَرْضِ يَتَّبَوُّ مِنْهَا حَيْثُ يَشَاءُ ﴿ نُصِيبُ بِرَحْمَتِنَا مَنْ نَشَاءُ ﴿ وَلَا نُضِيعُ أَجْرَ الْمُحْسِنِينَ

(गरज़ यूसुफ शाही खज़ानो के अफसर मुक़र्रर हुए) और हमने यूसुफ को युं मुल्क (मिस्र) पर क़ाबिज़ बना दिया कि उसमें जहाँ चाहें रहें हम जिस पर चाहते हैं अपना फज़ल करते हैं और हमने नेको कारो के अज़्र को अकारत नहीं करते

57

وَلَا جُرْأَلٌ آخِرَةٌ خَيْرٌ؟ لِلَّذِينَ ءَامَنُوا؟ وَكَانُوا؟ يَتَّقُونَ

और जो लोग ईमान लाए और परहेज़गारी करते रहे उनके लिए आखिरत का अज़्र उसी से कही बेहतर है

58

وَجَاءَ إِخْوَةُ يُوسُفَ فَدَخَلُوا؟ عَلَيْهِ فَعَرَفَهُمْ وَهُمْ لَهُ؟ مُنْكَرُونَ

(और चूँकि कनआन में भी कहत (सूखा) था इस वजह से) यूसुफ़ के (सौतेले भाई गल्ला खरीदने को मिस्र में) आए और यूसुफ़ के पास गए तो उनको फौरन ही पहचान लिया और वह लोग उनको न पहचान सके

59

وَلَمَّا جَهَّزَهُمْ بِجَهَازِهِمْ قَالَ أَتُنُونِي بِأَخٍ؟ لَكُمْ مِّنْ أَبِيكُمْ؟ أَلَا تَرَوْنَ أَنِّي أُوْفِي الْكَيْلَ وَأَنَا؟ خَيْرُ الْمُنْزِلِينَ

और जब यूसुफ़ ने उनके (गल्ले का) सामान दुरुस्त कर दिया और वह जाने लगे तो यूसुफ़ ने (उनसे कहा) कि (अबकी आना तो) अपने सौतेले भाई को (जिसे घर छोड़ आए हो) मेरे पास लेते आना क्या तुम नहीं देखते कि मैं यक़ीनन नाप भी पूरी देता हूँ और बहुत अच्छा मेहमान नवाज़ भी हूँ

60

فَإِنْ لَّمْ تَأْتُونِي بِهِ؟ فَلَا كَيْلَ لَكُمْ عِنْدِي وَلَا تَقْرُبُونِ

पस अगर तुम उसको मेरे पास न लाओगे तो तुम्हारे लिए न मेरे पास कुछ न कुछ (गल्ला वगैरह) होगा

61

قَالُوا؟ سَنُرَوِّدُ عَنْهُ أَبَاهُ وَإِنَّا لَفَاعِلُونَ

न तुम लोग मेरे करीब ही चढ़ने पाओगे वह लोग कहने लगे हम उसके वालिद से उसके बारे में जाते ही दरखास्त करेंगे

62

وَقَالَ لِفَتْنِهِ أَجْعَلُوا؟ بِضْعَتَهُمْ فِي رِحَالِهِمْ لَعَلَّهُمْ يَعْرِفُونَهَا إِذَا أُنْقَلَبُوا؟ إِلَىٰ أَهْلِهِمْ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ

और हम ज़रूर इस काम को पूरा करेंगे और यूसुफ़ ने अपने मुलाज़िमों (नौकरों) को हुक्म दिया कि उनकी (जमा) पूंजी उनके बोरो में (चूपके से) रख दो ताकि जब ये लोग अपने एहलो (अयाल) के पास लौट कर जाएं तो अपनी पूंजी को पहचान ले

فَلَمَّا رَجَعُوا ۖ إِلَىٰ آبِيهِمْ قَالُوا ۖ يَا أَبَانَا مُنِعَ مِنَّا الْكَيْلُ فَأَرْسِلْ مَعَنَا أَخَانَا نَكْتَلْ وَإِنَّا لَهُ ۖ لَحَافِظُونَ

(और इस लालच में) यायद फिर पलट के आएँ गरज़ जब ये लोग अपने वालिद के पास पलट के आए तो सब ने मिलकर अर्ज़ की ऐ अब्बा हमें (आइन्दा) गल्ले मिलने की मुमानिअत (मना) कर दी गई है तो आप हमारे साथ हमारे भाई (बिन यामीन) को भेज दीजिए

قَالَ هَلْ ءَامَنُكُمْ عَلَيْهِ إِلَّا كَمَا أَمِنْتُكُمْ عَلَىٰ أَخِيهِ مِنْ قَبْلُ ۖ فَالَلَّهُ خَيْرٌ حَافِظًا ۖ وَهُوَ أَرْحَمُ الرَّحِمِينَ

ताकि हम (फिर) गल्ला लाए और हम उसकी पूरी हिफाज़त करेंगे याकूब ने कहा मैं उसके बारे में तुम्हारा ऐतबार नहीं करता मगर वैसा ही जैसा कि उससे पहले उसके मांजाए (भाई) के बारे में किया था तो खुद उसका सबसे बेहतर हिफाज़त करने वाला है और वही सब से ज्यादा रहम करने वाला है

وَلَمَّا فَتَحُوا ۖ مَتَعَهُمْ وَجَدُوا ۖ بِضِئَتِهِمْ رُدَّتْ إِلَيْهِمْ ۖ قَالُوا ۖ يَا أَبَانَا مَا نَبْغِي ۖ هَذِهِ ۖ بِضِئَتُنَا رُدَّتْ إِلَيْنَا ۖ وَنَمِيرُ أَهْلَنَا وَنَحْفَظُ أَخَانَا وَنَزِدَادُ كَيْلَ بَعِيرٍ ۖ ذَٰلِكَ كَيْلُ ۖ يَسِيرُ ۖ

और जब उन लोगों ने अपने अपने असबाब खोले तो अपनी अपनी पूंजी को देखा कि (वैसे ही) वापस कर दी गई है तो (अपने बाप से) कहने लगे ऐ अब्बा हमें (और) क्या चाहिए (देखिए) यह हमारी जमा पूंजी हमें वापस दे दी गयी है और (गल्ला मुफ्त मिला अब इब्ने यामीन को जाने दीजिए तो) हम अपने एहलो अयाल के वास्ते गल्ला लायें और अपने भाई की पूरी हिफाज़त करेंगे और एक बार यतर गल्ला और बढ़वा लाएंगे

قَالَ لَنْ أَرْسِلَهُ ۖ مَعَكُمْ حَتَّىٰ تُؤْتُوا مَوْثِقًا ۖ مِّنَ اللَّهِ لَتَأْتُنَّنِي بِهِ ۖ إِلَّا أَن يُحَاطَ بِكُمْ ۖ فَلَمَّا ءَاتَوْهُ مَوْثِقَهُمْ قَالَ اللَّهُ عَلَىٰ مَا نَقُولُ وَكِيلٌ

ये जो अबकी दफा लाए थे थोड़ा सा गल्ला है याकूब ने कहा जब तक तुम लोग मेरे सामने खुदा से एहद न कर लोगे कि तुम उसको ज़रूर मुझ तक (सही व सालिम) ले आओगे मगर हाँ जब तुम खुद घिर जाओ तो मजबूरी है वरना मैं तुम्हारे साथ हरगिज़ उसको न भेजूंगा फिर जब उन लोगों ने उनके सामने एहद कर लिया तो याकूब ने कहा कि हम लोग जो कह रहे हैं खुदा उसका ज़ामिन है

وَقَالَ يَبْنِي لَا تَدْخُلُوا ۚ مِنْ ۚ بَابٍ ۚ وَاحِدٍ ۚ وَأَدْخُلُوا ۚ مِنْ أَبْوَابٍ ۚ مُتَفَرِّقَةٍ ۚ ۚ وَمَا
أُغْنِي عَنْكُمْ مِنَ اللَّهِ مِنْ شَيْءٍ ۚ إِنَّ الْحُكْمَ إِلَّا لِلَّهِ ۚ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ ۚ وَعَلَيْهِ
فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُتَوَكِّلُونَ

और याकूब ने (नसीहतन चलते वक्त बेटो से) कहा ऐ फरज़न्दों (देखो खबरदार) सब के सब एक ही दरवाजे से न दाखिल होना
(कि कहीं नज़र न लग जाए) और मुताफरिफ़ (अलग अलग) दरवाज़ों से दाखिल होना और मैं तुमसे (उस बात को जो) खुदा की
तरफ़ से (आए) कुछ टाल भी नहीं सकता हुक्म तो (और असली) खुदा ही के वास्ते है मैंने उसी पर भरोसा किया है और भरोसा
करने वालों को उसी पर भरोसा करना चाहिए

وَلَمَّا دَخَلُوا ۚ مِنْ حَيْثُ أَمَرَهُمْ أَبُوهُمْ مَا كَانَ يُغْنِي عَنْهُمْ مِنَ اللَّهِ مِنْ شَيْءٍ إِلَّا
حَاجَةً ۚ فِي نَفْسٍ يَعْقُوبَ قَضَاهَا ۚ وَإِنَّهُ ۚ لَذُو عِلْمٍ ۚ لِمَا عَلَّمْنَاهُ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ
النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ

और जब ये सब भाई जिस तरह उनके वालिद ने हुक्म दिया था उसी तरह (मिस्र में) दाखिल हुए मगर जो हुक्म खुदा की तरफ़
से आने को था उसे याकूब कुछ भी टाल नहीं सकते थे मगर (हाँ) याकूब के दिल में एक तमन्ना थी जिसे उन्होंने भी युं पूरा कर
लिया क्योंकि इसमे तो शक़ नहीं कि उसे चूँकि हमने तालीम दी थी साहिबे इल्म ज़रूर था मगर बहुतेरे लोग (उससे भी)
वाकिफ़ नहीं

وَلَمَّا دَخَلُوا ۚ عَلَى يُوسُفَ ۚ آوَىٰ إِلَيْهِ أَخَاهُ ۚ قَالَ إِنِّي أَنَا ۚ أَخُوكَ فَلَا تَبْتَئِسْ بِمَا
كَانُوا ۚ يَعْمَلُونَ

और जब ये लोग यूसुफ़ के पास पहुँचे तो यूसुफ़ ने अपने हकीक़ी (सगे) भाई को अपने पास (बग़ल में) जगह दी और (चुपके से)
उस (इब्ने यामीन) से कह दिया कि मैं तुम्हारा भाई (यूसुफ़) हूँ तो जो कुछ (बदसलूकियाँ) ये लोग तुम्हारे साथ करते रहे हैं
उसका रंज न करो

70

فَلَمَّا جَهَّزَهُمْ بِجَهَّازِهِمْ جَعَلَ السَّقَايَةَ فِي رَحْلِ أَخِيهِ ثُمَّ أَذَّنَ مُؤَذِّنٌ أَيَّتُهَا الْعِيرُ إِنَّكُمْ لَسُرُقُونَ

फिर जब यूसुफ ने उन का साज़ो सामान सफर गल्ला (वगैरह) दुरुस्त करा दिया तो अपने भाई के असबाब में पानी पीने का कटोरा (यूसुफ के इशारे) से रखवा दिया फिर एक मुनादी ललकार के बोला कि ऐ क्राफ़िले वालों (हो न हो) यकीनन तुम्ही लोग जरूर चोर हो

71

قَالُوا؟ وَأَقْبَلُوا؟ عَلَيْهِمْ مَاذَا تَفْقَدُونَ

ये सुन कर ये लोग पुकारने वालों की तरफ भिड़ पड़े और कहने लगे (आखिर) तुम्हारी क्या चीज़ गुम हो गई है

72

قَالُوا؟ نَفَقْدُ صُوعَ الْمَلِكِ وَلَمَنْ جَاءَ بِهِ؟ حِمْلُ بَعِيرٍ؟ وَأَنَا؟ بِهِ؟ زَعِيمٌ؟

उन लोगों ने जवाब दिया कि हमें बादशाह का प्याला नहीं मिलता है और मैं उसका ज़ामिन हूँ कि जो शरूख उसको ला हाज़िर करेगा उसको एक ऊँट के बोझ बराबर (गल्ला इनाम) मिलेगा

73

قَالُوا؟ تَاللّٰهِ لَقَدْ عَلِمْتُمْ مَا جِئْنَا لِنُفْسِدَ فِي الْأَرْضِ وَمَا كُنَّا سُرِقِينَ

तब ये लोग कहने लगे खुदा की कसम तुम तो जानते हो कि (तुम्हारे) मुल्क में हम फसाद करने की ग़रज़ से नहीं आए थे और हम लोग तो कुछ चोर तो हैं नहीं

74

قَالُوا؟ فَمَا جَزَاؤُهُ؟ إِنْ كُنْتُمْ كَذِبِينَ

तब वह मुलाज़िमीन बोले कि अगर तुम झूठे निकले तो फिर चोर की क्या सज़ा होगी

75

قَالُوا؟ جَزَاؤُهُ؟ مَنْ وَجِدَ فِي رَحْلِهِ؟ فَهُوَ جَزَاؤُهُ؟ كَذَلِكَ نَجْزِي الظَّالِمِينَ

(वे धड़क) बोल उठे कि उसकी सज़ा ये है कि जिसके बोरे में वह (माल) निकले तो वही उसका बदला है (तो वह माल के बदले में गुलाम बना लिया जाए)

فَبَدَأَ بِأَوْعِيَّتِهِمْ قَبْلَ وِعَاءِ أَخِيهِ ثُمَّ اسْتَخْرَجَهَا مِنْ وِعَاءِ أَخِيهِ ۖ كَذَلِكَ كِدْنَا لِيُوسُفَ ۚ مَا كَانَ لِيَأْخُذَ أَخَاهُ فِي دِينِ الْمَلِكِ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ ۚ نَرْفَعُ دَرَجَاتٍ مَن نَّشَاءُ ۚ وَفَوْقَ كُلِّ ذِي عِلْمٍ عَلِيمٌ ۚ

हम लोग तो (अपने यहाँ) ज़ालिमों (चोरों) को इसी तरह सज़ा दिया करते हैं गरज़ यूसुफ ने अपने भाई का थैला खोलने से क़बूल दूसरे भाइयों के थैलों से (तलाशी) शुरू की उसके बाद (आखिर में) उस प्याले को यूसुफ ने अपने भाई के थैले से बरामद किया यूसुफ को भाई के रोकने की हमने यू तदवीर बताइ वरना (बादशाह मिस्र) के क़ानून के मुवाफ़िक़ अपने भाई को रोक नहीं सकते थे मगर हाँ जब खुदा चाहे हम जिसे चाहते हैं उसके दर्जे बुलन्द कर देते हैं और (दुनिया में) हर साहबे इल्म से बढ़कर एक और आलिम है

ۚ قَالُوا ۚ إِنَّ يَسْرِقَ فَقَدْ سَرَقَ أَخٌ ۚ لَهُ ۚ مِنْ قَبْلُ ۚ فَأَسْرَهَا يُوسُفُ فِي نَفْسِهِ ۚ وَلَمْ يُبْدِهَا لَهُمْ ۚ قَالَ أَنْتُمْ شَرُّ مَكَانًا ۚ ۚ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا تَصِفُونَ

(गरज़) इब्ने यामीन रोक लिए गए तो ये लोग कहने लगे अगर उसने चोरी की तो (कौन ताज्जुब है) इसके पहले इसका भाई (यूसुफ) चोरी कर चुका है तो यूसुफ ने (उसका कुछ जवाब न दिया) उसको अपने दिल में पोशीदा (छुपाये) रखा और उन पर ज़ाहिर न होने दिया मगर ये कह दिया कि तुम लोग बड़े ख़ाना ख़राब (बुरे आदमी) हो

قَالُوا ۚ يَأَيُّهَا الْعَزِيزُ إِنَّ لَهُ ۚ أَبًا ۚ شَيْخًا ۚ كَبِيرًا ۚ فَخُذْ أَحَدَنَا مَكَانَهُ ۚ ۚ إِنَّا نَرَاكَ مِنَ الْمُحْسِنِينَ

और जो (उसके भाई की चोरी का हाल बयान करते हो खुदा ख़ूब बवाक़िफ़ है (इस पर) उन लोगों ने कहा ऐ अज़ीज़ उस (इब्ने यामीन) के वालिद बहुत बूढ़े (आदमी) हैं (और इसको बहुत चाहते हैं) तो आप उसके ऐवज़ (बदले) हम में से किसी को ले लीजिए और उसको छोड़ दीजिए

قَالَ مَعَاذَ اللَّهِ أَنْ نَأْخُذَ إِلَّا مَنْ وَجَدْنَا مَتَّعْنَا عَنْدَهُ ۚ إِنَّا إِذَا ۚ لَظَلِمُونَ

क्योंकि हम आपको बहुत नेको कार बुर्जुग़ समझते हैं यूसुफ ने कहा माज़ अल्लाह (ये क्यों कर हो सकता है कि) हमने जिसकी पास अपनी चीज़ पाई है उसे छोड़कर दूसरे को पकड़ लें (अगर हम ऐसा करें) तो हम ज़रूर बड़े बेइन्साफ़ ठहरे

فَلَمَّا أَسْتَيْسُوا ۚ مِنْهُ خَلَصُوا ۚ نَجِيًّا ۚ قَالَ كَبِيرُهُمْ أَلَمْ تَعْلَمُوا ۚ أَنْ أَبَاكُمْ قَدْ
أَخَذَ عَلَيْكُمْ مَوْتَقًّا ۚ مِّنَ اللَّهِ وَمِنْ قَبْلُ مَا فَرَطْتُمْ فِي يُوسُفَ ۚ فَلَنْ أُبْرَحَ الْأَرْضَ
حَتَّى يَأْذَنَ لِيَ أَبِي أَوْ يَحْكُمَ اللَّهُ لِي ۚ وَهُوَ خَيْرُ الْحَكِمِينَ

फिर जब यूसुफ की तरफ से मायूस हुए तो बाहम मशवरा करने के लिए अलग खड़े हुए तो जो शख्स उन सब में बड़ा था (यहूदा) कहने लगा (भाइयों) क्या तुम को मालूम नहीं कि तुम्हार वालिद ने तुम लोगों से खुदा का एहद करा लिया था और उससे तुम लोग यूसुफ के बारे में क्या कुछ ग़लती कर ही चुके हो तो (भाई) जब तक मेरे वालिद मुझे इजाज़त (न) दें या खुद खुदा मुझे कोई हुक्म (न) दे मैं उस सर ज़मीन से हरगिज़ न हटूंगा और खुदा तो सब हुक्म देने वालो से कहीं बेहतर है

أَرْجِعُوا ۚ إِلَىٰ أَبِيكُمْ فَقُولُوا ۚ يَابَنَانَا إِنَّ أَبْنَكَ سَرَقَ وَمَا شَهِدْنَا إِلَّا بِمَا عَلِمْنَا وَمَا
كُنَّا لِلْغَيْبِ حَفِظِينَ

तुम लोग अपने वालिद के पास पलट के जाओ और उनसे जाकर अर्ज़ करो ऐ अब्बा आपके साहबज़ादे ने चोरी की और हम लोगों ने तो अपनी समझ के मुताबिक़ (उसके ले आने का एहद किया था और हम कुछ (अर्ज़) ग़ैबी (आफत) के निगेहबान थे नहीं

وَسَلِّ الْقَرْيَةَ الَّتِي كُنَّا فِيهَا وَالْعِيرَ الَّتِي أَقْبَلْنَا فِيهَا ۚ وَإِنَّا لَصَدِيقُونَ

और आप इस बस्ती (मिस्र) के लोगों से जिसमें हम लोग थे दरयाफ्त कर लीजिए और इस काफले से भी जिसमें आए हैं (पूछ लीजिए) और हम यकीनन बिल्कुल सच्चे हैं

قَالَ بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ أَنْفُسُكُمْ أَمْرًا ۚ فَصَبْرٌ ۚ جَمِيلٌ ۚ عَسَى اللَّهُ أَنْ يَأْتِيَنِي بِهِمْ
جَمِيعًا ۚ إِنَّهُ ۚ هُوَ الْعَلِيمُ الْحَكِيمُ

(गरज़ जब उन लोगों ने जाकर बयान किया तो) याक़ूब न कहा (उसने चोरी नहीं की) बल्कि ये बात तुमने अपने दिल से गढ़ ली है तो (खैर) सब्र (और खुदा का) शुक्र खुदा से तो (मुझे) उम्मीद है कि मेरे सब (लड़कों) को मेरे पास पहुँचा दे बेशक वह बड़ा वाकिफ़ कार हकीम है

وَتَوَلَّى عَنْهُمْ وَقَالَ يَا سَفَى عَلَى يَوْسُفَ وَأَبْيَضَّتْ عَيْنَاهُ مِنَ الْحُزْنِ فَهُوَ كَظِيمٌ ۝

और याकूब ने उन लोगों की तरफ से मुँह फेर लिया और (रोकर) कहने लगे हाए अफसोस यूसुफ पर और (इस क़दर रोए कि) उनकी आँखें सदमे से सफेद हो गई वह तो बड़े रंज के ज़ाबित (झेलने वाले) थे

قَالُوا ۝ تَاللّٰهِ تَفْتَوُا ۝ تَذْكُرُ يَوْسُفَ حَتَّىٰ تَكُونَ حَرَضًا أَوْ تَكُونَ مِنَ الْهَالِكِينَ

(ये देखकर उनके बेटे) कहने लगे कि आप तो हमेशा यूसुफ को याद ही करते रहिएगा यहाँ तक कि बीमार हो जाएगा या जान ही दे दीजिएगा

قَالَ إِنَّمَا أَشْكُوا ۝ بَنِي وَحُزْنِي إِلَى اللَّهِ وَأَعْلَمُ مِنَ اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ

याकूब ने कहा (मैं तुमसे कुछ नहीं कहता) मैं तो अपनी बेकरारी व रंज की शिकायत खुदा ही से करता हूँ और खुदा की तरफ से जो बातें मैं जानता हूँ तुम नहीं जानते हो

يَبْنِي أَذْهَبُوا ۝ فَتَحَسَّسُوا ۝ مِنْ يَوْسُفَ وَأَخِيهِ وَلَا تَأْتِ ۝ يَسْأَلُ ۝ مِنْ رَّوْحِ اللَّهِ ۝ إِنَّهُ ۝ لَا يَأْتِ ۝ يَسْ مِنْ رَّوْحِ اللَّهِ إِلَّا الْقَوْمُ الْكَافِرُونَ

ऐ मेरी फरज़न्द (एक बार फिर मिस्र) जाओ और यूसुफ और उसके भाई को (जिस तरह बने) ढूँढ के ले आओ और खुदा की रहमत से ना उम्मीद न हो क्योंकि खुदा की रहमत से काफिर लोगो के सिवा और कोई ना उम्मीद नहीं हुआ करता

فَلَمَّا دَخَلُوا ۝ عَلَيْهِ قَالُوا ۝ يَٰأَيُّهَا الْعَزِيزُ مَسَّنَا وَأَهْلَنَّا الْضُرَّ وَجِئْنَا بِبِضْعَةٍ ۝ مُزْجَبَةٍ ۝ فَأَوْفِ لَنَا الْكَيْلَ وَتَصَدَّقْ عَلَيْنَا ۝ إِنَّ اللَّهَ يَجْزِي الْمُتَصَدِّقِينَ

फिर जब ये लोग यूसुफ के पास गए तो (बहुत गिड़गिड़ाकर) अर्ज़ की कि ऐ अज़ीज़ हमको और हमारे (सारे) कुनबे को कहत की वजह से बड़ी तकलीफ हो रही है और हम कुछ थोड़ी सी पूंजी लेकर आए हैं तो हम को (उसके ऐवज़ पर पूरा ग़ल्ला दिलवा दीजिए और (कीमत ही पर नहीं) हम को (अपना) सदक़ा ख़ैरात दीजिए इसमें तो शक़ नहीं कि खुदा सदक़ा ख़ैरात देने वालों को जजाए ख़ैर देता है

قَالَ هَلْ عَلِمْتُمْ مَا فَعَلْتُمْ بِيُوسُفَ وَأَخِيهِ إِذْ أَنْتُمْ جَاهِلُونَ

(अब तो यूसुफ से न रहा गया) कहा तुम्हें कुछ मालूम है कि जब तुम जाहिल हो रहे थे तो तुम ने यूसुफ और उसके भाई के साथ क्या क्या सुलूक किए

قَالُوا ۚ أَأَنَّكَ لَأَنْتَ يُوسُفُ ۚ قَالَ أَنَا ۚ يُوسُفُ وَهَذَا أَخِي ۚ قَدْ مَنَّ اللَّهُ عَلَيْنَا ۚ إِنَّهُ ۚ مَنْ يَتَّقِ وَيَصْبِرْ فَإِنَّ اللَّهَ لَا يُضِيعُ أَجْرَ الْمُحْسِنِينَ

(उस पर वह लोग चौंके) और कहने लगे (हाए) क्या तुम ही यूसुफ हो, यूसुफ ने कहा हाँ मैं ही यूसुफ हूँ और यह मेरा भाई है बेशक खुदा ने मुझे पर अपना फज़ल व (करम) किया है क्या इसमें शक़ नहीं कि जो शख़्स (उससे) डरता है (और मुसीबत में) सब्र करे तो खुदा हरगिज़ (ऐसे नेको कारों का) अज़्र बरबाद नहीं करता

قَالُوا ۚ تَأَلَّهِ لَقَدْ عَآثَرَكَ اللَّهُ عَلَيْنَا وَإِنْ كُنَّا لَخُطِئِينَ

वह लोग कहने लगे खुदा की क़सम तुम्हें खुदा ने यक़ीनन हम पर फज़ीलत दी है और बेशक़ हम ही यक़ीनन (अज़सरतापा) ख़तावार थे

قَالَ لَا تَثْرِيبَ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ ۚ يَغْفِرُ اللَّهُ لَكُمْ ۚ وَهُوَ أَرْحَمُ الرَّحِمِينَ

यूसुफ ने कहा अब आज से तुम पर कुछ इल्ज़ाम नहीं खुदा तुम्हारे गुनाह माफ़ फरमाए वह तो सबसे ज़्यादा रहीम है ये मेरा क़ुर्ता ले जाओ

أَذْهَبُوا ۚ بِقَمِيصِي هَذَا فَالْقُوهُ عَلَىٰ وَجْهِ أَبِي يَأْتِ بَصِيرًا ۚ وَأْتُونِي بِأَهْلِكُمْ أَجْمَعِينَ

और उसको अब्बा जान के चेहरे पर डाल देना कि वह फिर बीना हो जाएंगे (देखने लगेंगे) और तुम लोग अपने सब लड़के वालों को लेकर मेरे पास चले आओ

وَلَمَّا فَصَلَتِ الْعِيرُ قَالَ أَبُوهُمْ إِنِّي لَأَجِدُ رِيحَ يُوسُفَ ۚ لَوْلَا أَنْ تُفَنِّدُونِ

और जो ही ये काफ़िला मिस्र से चला था कि उन लोगों के वालिद (याक़ूब) ने कहा दिया था कि अगर मुझे सठिया या हुआ न कहो तो बात कहूँ कि मुझे यूसुफ की बू मालूम हो रही है

قَالُوا ۚ تَأَلَّهِ إِنَّكَ لَفِي ضَلَالِكَ الْقَدِيمِ

वह लोग कुनबे वाले (पोते वग़ैराह) कहने लगे आप यक़ीनन अपने पुराने ख़याल (मोहब्बत) में (पड़े हुए) हैं

فَلَمَّا أَنْ جَاءَ الْبَشِيرُ أَلْقَاهُ عَلَىٰ وَجْهِهِ ۖ فَارْتَدَّ بَصِيرًا ۚ ۱ ۚ قَالَ أَلَمْ أَقُلْ لَّكُمْ إِنِّي
أَعْلَمُ مِنَ اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ

फिर (यूसुफ की) खुशखबरी देने वाला आया और उनके कुर्ते को उनके चेहरे पर डाल दिया तो याकूब फौरन फिर दोबारा आँख वाले हो गए (तब याकूब ने बेटों से) कहा क्यों मैं तुमसे न कहता था जो बातें खुदा की तरफ से मैं जानता हूँ तुम नहीं जानते

قَالُوا ۚ يَا أَبَانَا أَسْتَغْفِرُ لَنَا ذُنُوبَنَا إِنَّا كُنَّا خَاطِئِينَ

उन लोगों ने अर्ज की ऐ अब्बा हमारे गुनाहों की मग़फ़िरत की (खुदा की बारगाह में) हमारे वास्ते दुआ माँगिए हम बेशक अज़सरतापा गुनेहगार हैं

قَالَ سَوْفَ أَسْتَغْفِرُ لَكُمْ رَبِّي ۖ إِنَّهُ ۙ ۚ هُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ

याकूब ने कहा मैं बहुत जल्द अपने परवरदिगार से तुम्हारी मग़फ़िरत की दुआ करूँगा बेशक वह बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है

فَلَمَّا دَخَلُوا ۚ عَلَىٰ يُوسُفَ ءَاوَىٰ إِلَيْهِ أَبْوِيهِ وَقَالَ ادْخُلُوا ۚ مِصْرَ إِن شَاءَ اللَّهُ
ءَامِنِينَ

(गरज़) जब फिर ये लोग (मय याकूब के) चले और यूसुफ शहर के बाहर लेने आए तो जब ये लोग यूसुफ के पास पहुँचे तो यूसुफ ने अपने माँ बाप को अपने पास जगह दी और (उनसे) कहा कि अब इन्शा अल्लाह बड़े इत्मिनान से मिस्र में चलिए

وَرَفَعَ أَبَوَيْهِ عَلَى الْعَرْشِ وَخَرُّوا لَهُ ۚ سَجْدًا ۚ ا ۚ وَقَالَ يَأْبَتِ هَذَا تَأْوِيلُ رُءْيَىٰ مِنْ قَبْلُ قَدْ جَعَلَهَا رَبِّي حَقًّا ۚ ا ۚ وَقَدْ أَحْسَنَ بِي إِذْ أَخْرَجَنِي مِنَ السِّجْنِ وَجَاءَ بِكُمْ مِّنَ الْبَدْوِ مِن ۚ بَعْدِ أَنْ نَزَغَ الشَّيْطَانُ بَيْنِي وَبَيْنَ إِخْوَتِي ۚ ا ۚ إِنَّ رَبِّي لَطِيفٌ ۚ لِّمَا يَشَاءُ ۚ ا ۚ إِنَّهُ ۚ هُوَ الْعَلِيمُ الْحَكِيمُ

(गरज) पहुँचकर यूसुफ ने अपने माँ बाप को तख्त पर बिठाया और सब के सब यूसुफ की ताज़ीम के वास्ते उनके सामने सजदे में गिर पड़े (उस वक्त) यूसुफ ने कहा ऐ अब्बा ये ताबीर है मेरे उस पहले ख्वाब की कि मेरे परवरदिगार ने उसे सच कर दिखाया बेशक उसने मेरे साथ एहसान किया जब उसने मुझे कैद खाने से निकाला और बावजूद कि मुझ में और मेरे भाईयों में शैतान ने फसाद डाल दिया था उसके बाद भी आप लोगों को गाँव से (शहर में) ले आया (और मुझसे मिला दिया) बेशक मेरा परवरदिगार जो कुछ करता है उसकी तद्वीर खूब जानता है बेशक वह बड़ा वाकिफकार हकीम है

ۚ رَبِّ قَدْ ءَاتَيْتَنِي مِنَ الْمُلْكِ وَعَلَّمْتَنِي مِمَّا تَأْوِيلُ الْأَحَادِيثِ ۚ ا ۚ فَاطِرَ السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ أَنْتَ وَلِيّ ۚ ا ۚ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ۚ ا ۚ تَوَفَّنِي مُسْلِمًا ۚ ا ۚ وَالْحَقِّنِي بِالصِّلَحِينَ

(उसके बाद यूसुफ ने दुआ की ऐ परवरदिगार तूने मुझे मुल्क भी अता फरमाया और मुझे ख्वाब की बातों की ताबीर भी सिखाई ऐ आसमान और ज़मीन के पैदा करने वाले तू ही मेरा मालिक सरपरस्त है दुनिया में भी और आखिरत में भी तू मुझे (दुनिया से) मुसलमान उठाये और मुझे नेको कारों में शामिल फरमा

ذَلِكَ مِنْ أَنۡا ۚ بَأۡءِ الْغَيْبِ نُوحِيهِ إِلَيْكَ ۚ ا ۚ وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ إِذْ أَجْمَعُوا ۚ ا ۚ أَمْرَهُمْ وَهُمْ يَمْكُرُونَ

(ऐ रसूल) ये किस्सा ग़ैब की ख़बरों में से है जिसे हम तुम्हारे पास वही के ज़रिए भेजते हैं (और तुम्हें मालूम होता है वरना जिस वक्त यूसुफ के भाई बाहम अपने काम का मशवरा कर रहे थे और (हलाक की) तदबीरे कर रहे थे

وَمَا أَكْثَرُ النَّاسِ وَلَوْ حَرَصْتَ بِمُؤْمِنِينَ

तुम उनके पास मौजूद न थे और कितने ही चाहो मगर बहुतेरे लोग ईमान लाने वाले नहीं हैं

وَمَا تَسْأَلُهُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ ۗ إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ ۖ لِلْعَالَمِينَ

हालॉकि तुम उनसे (तबलीगे रिसालत का) कोई सिला नहीं माँगते और ये (कुरान) तो सारे जहाँ के वास्ते नसीहत (ही नसीहत) है

وَكَايْنٍ مِّنْ آيَةٍ ۖ فِي السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ يَمُرُّونَ عَلَيْهَا وَهُمْ عَنْهَا مُعْرِضُونَ

और आसमानों और ज़मीन में (खुदा की कुदरत की) कितनी निशानियाँ हैं जिन पर ये लोग (दिन रात) गुज़ारा करते हैं और उससे मुँह फेरे रहते हैं

وَمَا يُؤْمِنُ أَكْثَرُهُمْ بِاللَّهِ إِلَّا وَهُمْ مُّشْرِكُونَ

और अक्सर लोगों की ये हालत है कि वह खुदा पर ईमान तो नहीं लाते मगर शिर्क किए जाते हैं

أَفَأَمِنُوا ۖ أَنْ تَأْتِيَهُمْ غَشِيَةٌ ۖ مِّنْ عَذَابِ اللَّهِ أَوْ تَأْتِيَهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً ۖ وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ

तो क्या ये लोग इस बात से मुतमइन हो बैठे हैं कि उन पर खुदा का अज़ाब आ पड़े जो उन पर छा जाए या उन पर अचानक क़यामत ही आ जाए और उनको कुछ खबर भी न हो

قُلْ هَذِهِ سَبِيلِي ۖ أَدْعُوا ۖ إِلَى اللَّهِ ۖ عَلَىٰ بَصِيرَةٍ أَنَا ۖ وَمَنِ اتَّبَعَنِي ۖ وَسُبْحَانَ اللَّهِ ۖ وَمَا أَنَا ۖ مِنَ الْمُشْرِكِينَ

(ऐ रसूल) उन से कह दो कि मेरा तरीका तो ये है कि मैं (लोगों) को खुदा की तरफ बुलाता हूँ मैं और मेरा पैरव (पीछे चलने वाले) (दोनों) मज़बूत दलील पर हैं और खुदा (हर ऐब व नुक़स से) पाक व पाकीज़ा है और मैं मुशरेकीन से नहीं हूँ

وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ إِلَّا رَجَالًا ۖ تُوْحَىٰ إِلَيْهِمْ مِّنْ أَهْلِ الْقُرَىٰ ۚ أَفَلَمْ يَسِيرُوا ۚ فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا ۚ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ وَلَدَارُ الْآخِرَةِ خَيْرٌ ۚ لِلَّذِينَ اتَّقَوْا ۚ أَفَلَا تَعْقِلُونَ

और (ऐ रसूल) तुमसे पहले भी हम गाँव ही के रहने वाले कुछ मर्दों को (पैग़म्बर बनाकर) भेजा किए है कि हम उन पर वही नाज़िल करते थे तो क्या ये लोग रुप ज़मीन पर चले फिरे नहीं कि ग़ौर करते कि जो लोग उनसे पहले हो गुज़रे हैं उनका अन्जाम क्या हुआ और जिन लोगों ने परहेज़गारी एख्तेयार की उनके लिए आखिरत का घर (दुनिया से) यक़ीनन कहीं ज्यादा बेहतर है क्या ये लोग नहीं समझते

حَتَّىٰ إِذَا اسْتَيْسَرَ الرُّسُلُ وَظَنُّوا ۚ أَنَّهُمْ قَدْ كُذِّبُوا ۚ جَاءَهُمْ نَصْرُنَا فَنُجِّىَ مَنْ نَّشَاءُ ۚ وَلَا يُرَدُّ بَأْسُنَا عَنِ الْقَوْمِ الْمُجْرِمِينَ

पहले के पैग़म्बरों ने तबलीग़े रिसालत यहाँ तक कि जब (क्रौम के ईमान लाने से) पैग़म्बर मायूस हो गए और उन लोगों ने समझ लिया कि वह झुटलाए गए तो उनके पास हमारी (खास) मदद आ पहुँची तो जिसे हमने चाहा नज़ात दी और हमारा अज़ाब गुनेहगार लोगों के सर से तो टाला नहीं जाता

لَقَدْ كَانَ فِي قَصَصِهِمْ عِبْرَةٌ ۚ لِأُولَٰئِكَ الْأَلْبَابِ ۚ مَا كَانَ حَدِيثًا يُفْتَرَىٰ وَلَكِنْ تَصْدِيقَ الَّذِي بَيْنَ يَدَيْهِ وَتَفْصِيلَ كُلِّ شَيْءٍ ۚ وَهُدًى ۚ وَرَحْمَةً ۚ لِّلْقَوْمِ ۚ يُؤْمِنُونَ

इसमें शक़ नहीं कि उन लोगों के किस्सों में अक़लमन्दों के वास्ते (अच्छी खासी) इब्रत (व नसीहत) है ये (कुरान) कोई ऐसी बात नहीं है जो (ख्वाहामा ख्वाह) गढ़ ली जाए बल्कि (जो आसमानी किताबें) इसके पहले से मौजूद हैं उनकी तसदीक़ है और हर चीज़ की तफ़सील और ईमानदारों के वास्ते (अज़सरतापा) हिदायत व रहमत है